मूल्यांकन के अन्य वर्गीकरण

संरचनात्मक व योगात्मक मूल्यांकन (Formative and Summative Evaluation)

मूल्यांकन का संरचनात्मक व योगात्मक रूप से वर्गीकरण सन् 1967 में मिचेल स्क्रीवेन ने किया जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्न प्रकार है—

1- संरचनात्मक मूल्यांकन – जब कोई भी शिक्षक योजना या शैक्षिक कार्यक्रम अपनी प्रारम्भिक या निर्माणात्मक अवस्था में हो और उसका मूल्यांकन करके उसमें सुधार किया जा सके तो इस प्रकार के मूल्यांकन को संरचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं। इस प्रकार संरचनात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य किसी प्रस्तावित शिक्षा योजना, कार्यक्रम या रीति, पाठ्यवस्तु, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री, परीक्षा प्रणाली, परीक्षा पैटर्न या मूल्यांकन विधि की संरचना करना होता है।

किसी भी शैक्षिक योजना, कार्यक्रम व रीति को अन्तिम रूप देने से पूर्व उसका मूल्यांकन कर उसमें सुधार करने की प्रक्रिया को संरचनात्मक मूल्यांकन कहकर पुकारते हैं। इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम मूल्यांकनकर्ता प्रस्तावित शिक्षा योजना, कार्यक्रम या रीति, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि या मूल्यांकन विधि का प्रारम्भिक प्रारूप तैयार करता है। इसके उपरान्त इसके प्रत्येक पद की व्याख्या करता है, और अन्त में विशेषज्ञों की सम्मति प्राप्त करता है।

और अन्त में विशेषज्ञों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर प्रस्तावित प्रारूप में परिवर्तन किया जाता है तथा उसे अन्तिम रूप दिया जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संस्थागत्मक मूल्यांकन प्रस्तावित प्राथमिक प्रारूप का मूल्यांकन करके प्रारूप में परिवर्तन करके उसे अन्तिम रूप देता है।

2- योगात्मक मूल्यांकन (Summative Evaluation)

किसी शैक्षिक योजना या कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने व उसे चालू कर देने के उपरान्त समग्र बोधगम्यता को ज्ञात करने के लिए किया गया मूल्यांकन योगात्मक मूल्यांकन कहलाता है। मूल्यांकन के क्षेत्र में योगात्मक मूल्यांकन वह मूल्यांकन है जो किसी पूर्व निर्मित व चालू शिक्षा कार्यक्रम, योजना या नीति, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री या मूल्यांकन विधि की उपयोगिता की जाँच करने के लिए तैयार किया जाता है। इसके अन्तर्गत मूल्यांकन कर्ता सर्वप्रथम योजना या नीति, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि आदि की उपयोगिता सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार योजना, प्रश्नावली, रेटिंग स्केल, शिक्षण विधि द्वारा उपयुक्त मापन उपकरण का निर्माण करता है। इसके उपरान्त विशेषज्ञों की सम्मति एकत्र करता है तथा यह निर्णय लेता है कि -

शिक्षा कार्यक्रम, योजना या नीति, शिक्षण विधि, शिक्षण सामग्री या मूल्यांकन विधि को भविष्य में आगे चालू (जारी) रखा जाय अथवा नहीं। यदि चालू रखा जाय तो किस रूप में ?

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन की एक व्यापक उपयोगिता है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है तथा यह एक व्यापक प्रत्यय है। इस सन्दर्भ में शिक्षा आयोग (1964-66) ने अपने प्रतिवेदन में लिखा है- "मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो शिक्षण प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन आदतों तथा शिक्षण की शिक्षा पद्धति पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन की प्रविधियाँ बांछित दिशाओं में छात्र के विकास के सन्दर्भ में प्रमाण संग्रहित करने के साधन हैं।

गैरेट व अन्य ने लिखा है- "शिक्षा में मूल्यांकन अभी एक व्यापक धारणा है। इसका प्रयोग विद्यालय कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, शिक्षक व बालकों की जाँच के लिए किया जाता है।

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास के बारे में आवश्यक सूचनाएँ उपलब्ध की जाती हैं तथा इसके द्वारा शिक्षण, परीक्षण, पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ, आदि में आवश्यक परिवर्तन व सुधार किये जाते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा की विभिन्न क्रियाओं में परिमार्जन करना है व उसमें वांछनीय परिवर्तन लाना है।

मूल्यांकन के महत्व के सन्दर्भ विभिन्न बिन्दु हैं। जिस पर विस्तृत प्रकार से प्रकाश डाला जा सकता है—

1- बालक में निहित योग्यताओं के सन्दर्भ में जानकारी।
2- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में जानकारी।
3- छात्रों को शैक्षिक निर्देशन प्रदान करने के लिए।
4- छात्रों के अर्जित ज्ञान की सीमा ज्ञात करने के लिए।
5- छात्रों की स्थिति व प्रगति ज्ञात करने के लिए।
6- शिक्षण में वांछनीय परिवर्तन व सुधार लाने के लिए।
7- शिक्षा में पाठ्यक्रम की व्याख्या व संशोधन हेतु।
8- पाठ्य-पुस्तकों व अन्य शैक्षिक क्रियाओं की व्याख्या और उनमें सुधार हेतु।
9- शिक्षण विधियों में सुधार।

Note— विस्तृत अध्ययन के लिए पढ़े - शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन - 'ज्योति शर्मा'

पृष्ठ संख्या — 34, 35

19/06/2021

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया